''राजीव गाँधी के प्रधानमंत्री कार्यकाल में अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत का दृष्टिकोण''

डॉ0 स्वाति

राजनीति विज्ञान विभाग, 148 अन्सरपुरा, हापुड रोड, मेरठ

सारांश

विदेश नीति किसी भी देश के लिए एक महत्वपूर्ण व्यवस्था है। जिस तरह शरीर को चलाने की शक्ति प्राप्त करने लिए भोजन करना पड़ता है ठीक उसी प्रकार देश के विकास के लिए विदेश नीति का होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विदेश नीति ही वो कारण जिससे दो देशों के बीच परस्पर सामरिक और कुटनीतिक सहयोग की भावना का विकास होता है। पूर्व प्रधानमत्री स्व0 राजीव गांधी की विदेश नीति के कारण ही भारत ने अपने स्वतंत्रता के बाद से ही विश्व पर अपनी छाप छोडनी शुरु कर दी। उन्ही की विदेश नीति का नतीजा था कि 05.01.1985 को दिल्ली में आयोजित शिखर सम्मेलन में उन्होनें छः देशों को परमाणु हथियारों के परीक्षण पर प्रतिबंध हेतु सहमत कर लिया, जिससे दिल्ली घोषणा के नाम से जाना गया। संयुक्त राष्ट्र संध के मंच पर 27.10.1985 को भी उन्होंनें दिल्ली घोषणा का स्मरण विभिन्न राज्याध्यक्षों को कराया। बेलग्रेड से लेकर क्वालालम्पुर तक राष्ट्रमंडल के शासन प्रमुखों की सभा में राजीव जी द्वारा प्रस्तुत किए गये पृथ्वी रक्षा कोष को मान्यता मिली, जिससे विदेशों में भारत का गौरव बढ़ा। यह सब राजीव जी की विदेश नीति के कारण ही सम्भव हो पाया।

मूल शब्दः– *विदेश नीति, कूटनीति, शिखर सम्मेलन, दिल्ली घोषणा, संयुक्त राष्ट्र संघ।*

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 स्वाति

राजीव गाँधी के प्रधानमंत्री कार्यकाल में अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत का दृष्टिकोण,

RJPP 2017, Vol. 15, No. 3, pp. 94-98, Article No. 14 (RP591)

Online available at : *http://anubooks.com/?page_id=2004*

राजीव गांधी ने प्रधानमंत्री पद ग्रहण करने के बाद अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर विश्व शान्ति की प्रतिष्ठा के लिए ऐतिहासिक पहल की और अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के निदान में गहरी रूची ली। इस संदर्भ में उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के वैदेशिक सम्बन्धों को क्या दिशा प्रदान की, यह देखना अधिक दिलचस्प है। शान्ति व्यवस्था बनाये रखने के संदर्भ में उन्होंने भारत के दृष्टिकोण की 5 जनवरी 1985 को घोषणा की और कहा कि हमने अपनी विदेश नीति में दो प्रमुख लक्ष्यों को प्राथमिकता दी है। एक, भारत के राष्ट्रीय हितों की रक्षा और विश्व शान्ति के लिए भारत के सतत् प्रयास। राष्ट्रीय हितों की रक्षा प्रायः सभी देशों और उनकी सरकारों का सर्वोच्च लक्ष्य होता है। इसलिए महत्व की बात यह होती है कि कोई देश और उसका कर्णधार 'राष्ट्रीय हितों' की व्याख्या किस रूप में करता है। इतिहास में इसके कितने ही उदाहरण मिलते हैं कि कुछ देशों या उनके प्रशासकों ने 'राष्ट्रीय हितों की रक्षा' के नाम पर युद्ध शोषण और साम्राज्य–विस्तार की नीतियों को अपनाया। आज भी अधिकांश देशों ने अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के नाम पर सैनिक गठबंधन स्थापित कर रखे हैं या शस्त्रास्त्रों के निर्माण पर अपने बहुमूल्य और सीमित साधनों का अंधाधुंध अपव्यय करते हैं। इस विषय पर जहाँ तक भारत के दृष्टिकोण की बात है तो स्वाधीनता प्राप्ति के समय से ही भारत की यह मान्यता रही है कि 'राष्ट्रीय हित' और 'विश्व शान्ति' समानार्थक अथवा परस्पर–पूरक लक्ष्य है। राजीव गाँधी का राजनयिक व्यवहार इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि उन्होंने भारत के इस दृष्टिकोण का अंतर्राष्ट्रीय मंचों से खूब प्रचार–प्रसार किया और इसको पारस्परिक दृष्टि से देखा, समझा और कार्यान्वित किया था।

राजीव गाँधी ने भारत की विदेश नीति को सशक्त अथवा प्रभावशाली बनाने के उद्देश्य से विश्व शान्ति और गुटनिरपेक्षता के प्रश्न पर सबसे अधिक ध्यान दिया। इस संदर्भ में उन्होंने देखा कि अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर परमाणु शस्त्रों तथा अन्य हथियारों की होड़ और उनके बढ़ते हुए भण्डारों के परिणामस्वरूप संसार विध्वंस और विनाश के कगार पर खड़ा हुआ था। उन्होंने अपने प्रधानमंत्री काल में अंतर्राष्ट्रीय मंचों से निरस्त्रीकरण के विरूद्ध भी विशेष प्रयास किये और इसका प्रबल विरोध किया।

राजीव गाँधी ने 24 अक्टूबर 1985 को भारत की विदेश नीति के प्रमुख हथियार 'शान्ति व सह–अस्तित्व' पर बल दिया। इस बार उनके लिए **मंच संयुक्त राष्ट्रसंघ** की चालीसवीं जयन्ती थी। इस अवसर पर **महासभा** में अपने भाषण में राजीव गाँधी ने विभिन्न राज्याध्यक्षों और राजनयिकों को 'दिल्ली घोषणा' का स्मरण कराते हुए कहा :

> ''दिल्ली सम्मेलन के समय सारी दुनिया के (परमाणु शस्त्रों वाले देशों) जनमत ने इस घोषणा का स्वतंत्र रूप से स्वागत किया था। इस अवसर पर मैं केवल भारत की विदेश नीति के मुख्य शस्त्र 'विश्व शान्ति' एवं 'सह–अस्तित्व' के संकल्प को दोहराने पर बल दूँगा और मेरी अपील है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ की जयन्ती के अवसर पर सभी राष्ट्र अपने आपको विश्व शान्ति के प्रति समर्पित करने का संकल्प लें।

इस अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय मंच से अपने भाषण में प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने विश्व शान्ति और सह–अस्तित्व के लिए एक और बड़े खतरे की भी चर्चा की थी।

इसके लिए **नसाउ में राष्ट्रमण्डल शिखर सम्मेलन** और **संयुक्त राष्ट्रसंघ जयन्ती शिखर**

सम्मेलन का अक्टूबर 1985 में आयोजन किया गया। इस मंच से भी राजीव गाँधी ने नामीबिया की समस्या की चर्चा की और उसको शीघ्र स्वतन्त्र किये जाने की जोरदार माँग की। जिसमें दक्षिण अफ्रीका को अपनी नस्लभेद–नीति समाप्त करने के लिए छः महीने का समय दिया गया था। इन छः महीनों के दौरान भारत के स्वर्णसिंह तथा छः अन्य राष्ट्रमण्डलीय देशों के प्रतिनिधि दक्षिण अफ्रीका में विभिन्न राजनैतिक पक्षों के नेताओं से मिले और इस समस्या को सुलझाने का प्रयास किया।

राजीव गाँधी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत सरकार का दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए यह भी कहा गया था कि उनकी रणनीति पड़ोसी देशों के साथ द्विपक्षीय सम्बन्धों के अतिरिक्त, क्षेत्रीय सहयोग और आदान–प्रदान को बराबरी के आधार पर बढ़ाया जाना है। इस दिशा में इन्दिरा गाँधी के प्रधानमंत्रित्व काल से ही प्रयास जारी थे और प्रारम्भ से ही राजीव गाँधी ने भी इस योजना को पूर्ण समर्थन दिया था एवं नीति सम्बन्धी अपने प्रारम्भिक प्रसारणों और घोषणाओं में इसके महत्व पर बल दिया था।

राजीव गाँधी काल में भारत सरकार के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रस्तुत किये गये दृष्टिकोणों का सकारात्मक उदाहरण इस तथ्य से भी मिलता है कि प्रथम दक्षिण एशिया सम्मेलन के आयोजन (7–8 दिसम्बर 1985) के दौरान उन्होंने ढाका (बांग्लादेश) में क्षेत्रीय सहयोग की नयी संस्था **'दक्षिण एशिया क्षेत्रीय संघ' (सार्क)** को अपना पूर्ण समर्थन और हार्दिक शुभकामनाएँ दी थीं तथा विश्वास व्यक्त किया था कि इन क्षेत्रीय प्रयासों के फलस्वरूप पड़ोसी देशों के साथ द्विपक्षीय सम्बन्धों में सुधार होगा। इस दृष्टि से उन्होंने पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल ज़िया–उल–हक़ और श्रीलंका के राष्ट्रपति जयवर्धने से अलग–अलग बातचीत की थी।

राजीव गाँधी ने **दक्षिण एशियाई राष्ट्रों** के आर्थिक व सांस्कृतिक विनिमय के विषय में क्षेत्रीय सहयोग की आवश्यकता के बारे में अपना समर्थन व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र के द्विपक्षीय समझौतों में दक्षिण–दक्षिण सहयोग विविध दिशाएँ जोड़ सकता है। निःसन्देह दक्षिण एशिया के क्षेत्रों और भारतीय उपमहाद्वीप के अपने राजनैतिक तनाव हैं, पर क्षेत्रीय सहयोग, वैज्ञानिक, तकनीकी और विकासशील लाभ में योगदान दे सकता है। राजीव गाँधी ने कहा कि ये लक्ष्य तभी ठीक ढंग से पूरे हो सकते हैं जब बड़ी शक्तियाँ युद्धगत या अन्य किसी आधार पर हस्तक्षेप न करें। 2 सितम्बर 1986 में **हरारे में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन** की सभा में राजीव गाँधी ने चिन्ता प्रकट करते हुए कहा था कि दक्षिण–दक्षिण सहयोग बहुत कम उपलब्धि हुई है।

राजीव गाँधी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की पहल का लाभ यह हुआ कि दक्षिण एशिया में सद्भावना और सहयोग के नये वातावरण का निर्माण हुआ, जो विश्व शन्ति की दिशा में एक सशक्त और सकारात्मक कदम था। यह निश्चय ही विश्व शान्ति की दिशा में एक ऐसा कदम था जिसके द्वारा विश्व शान्ति की बिगड़ी दशा को सुधारा जा सकता था। इससे न केवल भारत के बल्कि दुनिया के समस्त राष्ट्रों के राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित बनाया जा सकता था। इस संदर्भ में सिद्धांत और व्यवहार दोनों स्तरों पर कम से कम भारत की विदेश नीति का तो यही लक्ष्य था।

राजीव गाँधी की सरकार भी नेहरू सरकार की तर्ज पर सैनिक गुटों से पृथक रही। इसके विपरीत विश्व की महाशक्तियाँ संसार भर में अपने सैनिक संगठन सुदृढ़ करने की होड़ में लगी हुई थीं।

अमेरिका महाशक्ति की नौसेना को एक सैनिक संगठन के नौसैनिक बेड़ों की सहायता मिल

रही थी। इस विदेशी जलीय उपस्थिति को एशियाई और अफ्रीकी तटवर्ती देशों के विरूद्ध प्रयुक्त किया जा रहा था। इसके अतिरिक्त पाकिस्तान भी केन्द्रीय कमान को करांची के समीप हवाई अड्डे से खुले महायुद्ध की निगरानी की सुविधाएँ उपलब्ध करा रहा था। राजीव गाँधी ने समय–समय पर अंतर्राष्ट्रीय मंचों और भारतीय संसद में इस प्रकार के घटनाचक्रों द्वारा शीतयुद्ध के भारतीय सीमाओं तक पहुँचने के खतरे के प्रति विश्व को आगाह किया था। इसी प्रकार श्रीलंका में भी एक महाशक्ति ने सैनिक एवं संचार माध्यम केन्द्र स्थापित करने का प्रयास किया था, परन्तु राजीव गाँधी द्वारा श्रीलंका के राष्ट्रपति जयवर्द्धने के साथ समझौता हो जाने से वह खतरा टल गया था।

9 जून 1988 को प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा में दिए गए अपने भाषण में एक परमाणु शस्त्ररहित विश्व (Nuclear Weapon Free World) का आह्वान किया। इस अवसर पर दिये गये उनके भाषण का कुछ अंश इस प्रकार है :

"We are approaching the close of the twentieth century. It has been the most bloodstained century in History. Fifty-Eight million perished in two World Wars. Forty million more have died in other conflicts. In the last nine decades, the ravenous machines of war have decoured nearly one hundred million people. The appetite of these monstrous machines grows on what they feed. Nuclear war will not mean the death of a hundred million people. Or even a thousand million. It will mean the extinction of four thousand million: the end of life as we know it on our planet Earth. We come to the United Nations to seek your support. We seek your support to put a stop to this madness.

इस प्रकार समय–समय पर राजीव गाँधी ने अंतर्राष्ट्रीय मंचों से–चाहे वह संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, चाहे गुटनिरपेक्ष सम्मेलन हो या दक्षेत्र अथवा राष्ट्रमंडल सम्मेलन हो हमेशा विश्व शान्ति परमाणु शस्त्ररहित विश्व सहयोग पर बल दिया तथा उपनिवेशवाद एवं नस्लवाद का प्रबल विरोध किया। विश्व पर्यावरण के सम्बन्ध में भी राजीव गाँधी ने एक नई राह दिखाई। बेलग्रेड से लेकर कुआलालम्पुर तक राष्ट्रमंडल के शासन प्रमुखों की सभा में राजीव जी द्वारा पेश किए गए प्रस्ताव ''पृथ्वी रक्षा कोष'' को मान्यता मिली, जिससे भारत का गौरव बढ़ा। मानव जाति के कल्याण की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. इंडियन एक्सप्रेस, 6 मई 1986 (माइक्रोफिल्म), तीन मूर्ति हाऊस, नई दिल्ली।
2. डॉ0 पदमाशा, राजीव गाँधी का नेतृत्व, साहित्य निधि, दिल्ली, 1988
3. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, वार्षिक रिपोर्ट, 1984–1995, नई दिल्ली 1995
4. अशोक कपूर एवं जयरत्नम विलसन, फॉरेन पॉलिसीज ऑफ इंडिया एण्ड हर नेबर्ज, लंदन, 1996
5. सतीश कुमार, ईयर बुक ऑन इंडियाज फॉरेन पॉलिसी, 1985–86, नई दिल्ली, 1988

6. प्रमोद कुमार मिश्रा, टुवाईस ए0 फ्रेमवर्क ऑफ साउथ एशियन रीजनल कॉपरेशन : कोलम्बो टू काठमांडू एण्ड एशिया, फॉरेन अफेयर्ज रिपोर्ट्स, वॉल्यूम–31, अंक–12, दिसम्बर 1989
7. के0पी0 सक्सेना, इंडियाज फॉरेन पॉलिसी : दा डिसीजन मैकिंग प्रोसेस, इंटरनेशनल स्टडीज, वॉल्यूम–33, 1996
8. वी0पी0 दत्त, इंडियाज फॉरेन पॉलिसी, नई दिल्ली, 1987
9. बॉम्बे क्रोनिकल, बम्बई से प्रकाशित, 18 दिसंबर 1985, तीन मूर्ति हाउस, नई दिल्ली
10. भाषण–नवम्बर 1986, बंगलौर सार्क सम्मेलन–जगदीष पीयूष, राजीव गाँधी : नए भारत के भगीरथ, यूनिवर्सिटी पब्लिशर्स, नई दिल्ली
11. विदेश नीति की समिति पर भाषण–न्यूयॉर्क, 23 अक्टूबर, 1985
12. नाम सम्मेलन–हरारे (जिम्बाबवे) में भाषण, 2 दिसम्बर 1986
13. पंडित हनुमान प्रसाद बावलिया, आशा की किरण राजीव गाँधी
14. रमेश ठाकुर, दॉ पॉलिटिक्स एण्ड इकोनोमिक्स ऑफ इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी, नई दिल्ली, 1994
15. भवानी सेन गुप्ता, राजीव गाँधी : ए पॉलिटिकल स्टडी, कोणार्क पब्लिशर्स, दिल्ली, 1989
16. श्रीधर के0 खत्री, डिकेड ऑफ साऊथ एशियन रीजनलिज्म : रिट्रोस्पेक्ट एण्ड प्रोस्टेक्ट्स, कन्टमप्रेरी साऊथ एशिया, 1992
17. ए0एम0 वोहरा, इंडिया पीस कीपिंग इन श्रीलंका, सतीश कुमार, ईयर बुक ऑन इंडियाज फॉरेन पॉलिसी, नई दिल्ली, 1990
18. पार्लियामेंटरी डिबेट्स (लोकसभा), भाग–2, पैरा–2, 11 व 16, 1/52/922, कॉलम 1971
19. सम्मेलन–जगदीश पीयूष, राजीव गाँधी : नए भारत की भगीरथ